

# महासती द्रौपदी







**COLLECTION OF VARIOUS**  
-> **HINDUISM SCRIPTURES**  
-> **HINDU COMICS**  
-> **AYURVEDA**  
-> **MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**[creator of  
hinduism  
server]**



**KAPWING**



## महासती द्रौपदी

हिन्दू धर्म के प्राचीनतम साहित्य में वेद, पुराण, उपनिषद् आदि मुख्य ग्रन्थ हैं जो भारतीय संस्कृति और दर्शन के मानक उपहार हैं। इनमें भारतीय ज्ञान-विज्ञान की अथाह सम्पदा समाहित है। रामायण और महाभारत दो महाकाव्य हैं। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण में प्रभु श्रीराम का सम्पूर्ण जीवन वर्णित है, जबकि महाभारत एक अनुपम धार्मिक व पौराणिक ग्रन्थ है।

महाभारत में दो मुख्य राजवंशियों के बीच लड़े गये धर्मयुद्ध की सम्पूर्ण व्याख्या है। सत्य और असत्य के मध्य हुये इस महासंघर्ष का वीरोचित वर्णन है। इसी युद्ध में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को युद्ध के लिए मार्गदर्शन व प्रेरणा दी गई जो भारतीय जनमानस में श्रीमद्भगवद्गीता के रूप में प्रस्फुटित हुई है। यह प्रत्येक भारतीय के लिये अद्भुत प्रेरणा स्रोत है। द्रौपदी महाभारत के मुख्य पात्रों में से एक है। वह पांचाल देश के राजा द्रुपद की पुत्री थी।

### जन्म व परिवार

प्राचीन काल में पांचाल नाम का एक राज्य था। द्रुपद वहाँ का राजा था। बहुत समय तक उन्हें कोई संतान नहीं हुई। इसके लिए उन्होंने कठोर तप किये। ईश्वरीय कृपा से उनके घर दो सन्तानों का जन्म हुआ – पहला पुत्र धृष्टद्युम्न और दूसरी कन्या जिसका नाम द्रौपदी था।

### द्रौपदी का स्वयंवर

द्रौपदी बहुत सुन्दर, सुशील व अच्छे स्वभाव की कन्या थी। जब वह बड़ी हुई तो राजा द्रुपद ने उसका किसी योग्य राजकुमार से विवाह करने का निश्चय किया। इसके लिये उन्होंने स्वयंवर की योजना बनाई। स्वयंवर एक विवाह पद्धति है जिसमें राजकन्या अपने पति का स्वयं चुनाव करती है। इसके लिये कई देशों के राजाओं और राजकुमारों को निमंत्रण भेजे गये।

राजमहल को भव्य प्रकार से सजाया गया था। सैकड़ों राजा और राजकुमार वहाँ एकत्रित हुए। इनमें द्रौपदी के लिये सबसे योग्य वर कौन है, इसका पता लगाना कठिन था। इसके लिये राजा द्रुपद ने एक शर्त रखी। सभा के बीचोंबीच एक यांत्रिक रचना की गयी। उस पर घूमती हुई एक मछली थी जिसकी परछाई नीचे रखे गये पानी में दिखती थी। एक भारी धनुष पास में रखा था। जो वीर धनुर्धर धनुष को उठाकर, पानी में परछाई देखकर उस मछली को तीर मारकर नीचे गिरायेगा उसी से द्रौपदी का विवाह होगा।

जैसे ही राजा द्रुपद द्वारा इस शर्त की घोषणा की गयी, वहाँ उपस्थित राजाओं में से अनेक पीछे हट गये। बहुत से राजकुमार तो उस भारी धनुष को उठा भी नहीं पाये। एक - एक कर बहुत से युवा राजाओं-राजकुमारों ने प्रयास किया परन्तु असफल रहे। यह देखकर राजा द्रुपद बहुत चिन्तित हो गये। उन्होंने निराशापूर्वक कहा -

“क्या यहाँ एक भी पराक्रमी वीर नहीं है जो मेरी कन्या से विवाह करने योग्य हो?”

तभी ब्राह्मणों के साथ बैठा हुआ एक युवक सामने आया। उसे देखकर सभी हँसते हुये कटाक्ष करने लगे, “क्या वह धनुष जिसने सभी राजाओं और राजकुमारों को अपमानित किया, एक ब्राह्मण उठा सकेगा?”

वह ब्राह्मण युवक धैर्यपूर्वक धनुष के पास गया। उसने धनुष को प्रणाम किया व उसे सहजता से उठाया, फिर प्रत्यंचा चढ़ाकर नीचे पानी में देखते हुए एक तीर मछली की ओर छोड़ा। घूमने वाली मछली तुरन्त नीचे गिर पड़ी। सभी लोग यह देखकर आश्चर्यचकित रह गये। राजा द्रुपद व उनकी पुत्री - दोनों के चेहरे पर प्रसन्नताभरी मुस्कान छा गई। द्रौपदी ने उस ब्राह्मण के गले में वरमाला डाल दी।

**वह युवक कौन था?**

भारत में उस समय ‘कुरु’ नाम का बहुत प्रसिद्ध राजवंश था। उसमें धृतराष्ट्र और पांडु दो भाई थे। पांडु के पाँच पुत्र थे - युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। ज्येष्ठ युधिष्ठिर सत्यप्रिय था। भीम बहुत बलवान था व गदायुद्ध में निपुण था। अर्जुन एक प्रवीण धनुर्धारी था। वे पाँचो भाई पांडव कहलाते थे। दूसरे भाई धृतराष्ट्र दृष्टिहीन थे। उनके सौ पुत्र थे जो कौरव कहलाते थे। इनमें दुर्योधन और दुःशासन सबसे बड़े थे।

राजा पांडु की मृत्यु के पश्चात् कौरव सभी पांडवों को मारकर उनके राज्य को अपने अधिकार में लेना चाहते थे। कौरव अहंकारी और संस्कारविहीन थे। उनके पिता धृतराष्ट्र भी बेटों की दुराचारी सोच व कृत्य में सहभागी थे।

धृतराष्ट्र ने एक बार पांडवों को बुलाकर कहा - “आज वारणावत में उमा-महेश्वर का उत्सव है। तुम लोग भी उसमें भाग लो।”

अत्यंत आनंदित भाव से पांडव अपनी माता - कुंती को लेकर वारणावत उत्सव में गये। यह कौरवों की पांडवों को मारने की सुनियोजित चाल थी। उन्होंने लाख का बहुत ही सुन्दर महल (लाक्षागृह) बनवाया था। योजना यह थी कि जब पांडव उस महल में रात्रि में सोयें, तब उसमें आग लगा दी जाये। परन्तु विदुर को जैसे ही यह बात मालूम हुई, उन्होंने लाक्षागृह के नीचे एक सुरंग बनवा दी और पांडवों को इसकी गुप्त जानकारी दे दी।

एक रात पांडवों ने स्वयं उस महल को जला दिया। लाख से निर्मित महल पूरी तरह जल गया। पांडव गुप्त सुरंग से निकल कर वन में पहुँच गये। वे चक्रपुर नाम के नगर में ब्राह्मणों के वेश में रहने लगे।

इन्हीं दिनों उन्होंने द्रौपदी के स्वयंवर की बात सुनी थी और वे पांचाल पहुँचे। जिस ब्राह्मण युवक ने स्वयंवर सभा में धनुष उठाकर मछली की परछाई देखकर उसे तीर मार कर गिराया था, वह क्षत्रीयवीर अर्जुन ही था।

### पांडवों की पत्नी

द्रौपदी के साथ पांडव अपने घर लौटे। माँ घर के अन्दर थी। प्रसन्न होकर उन्होंने माँ से कहा - “देखो माँ, हम एक अमूल्य भेंट लाये हैं।” अन्दर से ही माता कुंती ने कहा - “उसे बराबर बाँट लो।”

माता के शब्द तो पांडव भाईयों के लिए ब्रह्मवचन थे। उन्होंने द्रौपदी को अपनी पत्नी मान लिया। जब राजा द्रुपद को इसका पता चला तो वे बहुत दुःखी हुये। तब महर्षि व्यास ने उनसे कहा, “राजन्, पाँच पांडवों की पत्नी होने के लिए ही द्रौपदी का जन्म हुआ है। द्रौपदी के

सौभाग्य के कारण ही सभी पांडव जलते हुए महल से बचकर बाहर आये थे।" इस प्रकार राजा द्रुपद की चिंता का निवारण हुआ। बाद में भगवान श्रीकृष्ण की उपस्थिति में पांडवों का द्रौपदी के साथ विवाह हुआ।

कुरु वंश के पितामह भीष्म और पांडवों के गुरु द्रोणाचार्य दोनों ही बड़े खुश हुए। उन्होंने धृतराष्ट्र से कहा कि पांडव अभी भी ईश्वर की कृपा से जीवित हैं। उनके अधिकार का आधा राज्य उन्हें मिलना चाहिये।

जब पांडवों को उनका आधा राज्य प्राप्त हुआ तो उन्होंने इन्द्रप्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया। कुछ समय बाद उन्होंने एक राजसूय यज्ञ करने का विचार किया। इसके लिए एक विशाल और भव्य सभागृह बनाया गया।

भगवान श्रीकृष्ण स्वयं यज्ञ का संचालन कर रहे थे। कौरवों को भी यज्ञ के लिए आमंत्रित किया गया।

उस अति सुन्दर सभागृह की रचना इस प्रकार थी कि जब उस सभागृह में दुर्योधन आये तो वह पानी को चिकना फर्श समझ कर पानी में गिर गये। द्रौपदी इस पर हँसने लगी। दुर्योधन बहुत क्रोधित हो गया। जहाँ फर्श था वहाँ दुर्योधन ने सोचा कि यहाँ पानी है। इसलिए उन्होंने अपने पहने हुए कपड़े सम्हाल लिए ताकि वे गीले न हों। उसे देखकर फिर से सभागृह में हँसी का ठहाका लगा। दुर्योधन क्रोध व लज्जा से जल भुन गया। उसने पांडवों से इस अपमान का बदला लेने की प्रतिज्ञा की।

### भयंकर दाँव

कुछ दिन बाद योजना बना कर दुर्योधन ने युधिष्ठिर को द्यूत क्रीड़ा

(जुआ) खेलने के लिए निमंत्रण भेजा। युधिष्ठिर को द्यूत खेलने का बहुत शौक था। किंतु वे उसमें प्रवीण नहीं थे। कौरवों का मामा शकुनि बहुत अनुभवी खिलाड़ी था। वह बड़ा धूर्त व चालाक भी था। द्यूतक्रीड़ा आरम्भ हुई। युधिष्ठिर हारते गये। उन्होंने अपने रथ, घोड़े, हाथी, नौकर भी दाँव पर लगाये और हार गये। अन्त में वे अपना राज्य भी खो बैठे। फिर चालबाज शकुनि ने ललकारा - “अब आप द्रौपदी को दाँव पर लगाइये। यदि आप जीते तो सब कुछ वापस मिलेगा; आपका राज्य भी।”

खेलने की धुन में युधिष्ठिर अपना विवेक भी खो चुके थे। उन्होंने बिना कुछ सोचे समझे द्रौपदी को भी दाँव पर लगा दिया। पाँसे फेंके गये और कौरव पुनः जीत गये। पांडवों के लिए यह बहुत बड़ा आघात था।

### भगवान की कृपा

द्रौपदी के हारने पर दुर्योधन बहुत जोर से हँसा। संस्कार व शिष्टाचार की सभी सीमाएँ पार करते हुये उसने आज्ञा दी - “द्रौपदी अब मेरी दासी है। उसे पकड़कर यहाँ लाओ।”

पाँचों पांडव बुरी तरह लज्जित और अपमानित महसूस कर रहे थे। युधिष्ठिर को अब अपनी गलती पर पश्चाताप हुआ। लेकिन अब काफी देर हो चुकी थी।

द्रौपदी अपने राजमहल में बैठी थी। वहाँ दुर्योधन का दूत गया और उसने द्रौपदी से कहा - “युधिष्ठिर ने आपको द्यूत में गँवा दिया है और दुर्योधन जीत गया है। आपको अब धृतराष्ट्र के महल में दासी के रूप में रहना होगा।”



द्रौपदी पर जैसे पहाड़ टूट पड़ा। वह व्याकुल हो गयी। उसने कहा - “यह कैसा अनर्थ है? क्या आज तक किसी ने अपनी पत्नी को दाँव पर लगाया है? यदि युधिष्ठिर पहले स्वयं को खो बैठे थे, तो बाद में मुझे दाँव पर लगाने का उनको कोई अधिकार नहीं। जाओ! देखकर आओ। पहले उन्होंने किसे दाँव पर लगाया था?”

यह सुनकर दुर्योधन बहुत क्रोधित हो गया। उसने कहा - “एक दासी का यह दुस्साहस। दुःशासन, जाओ और द्रौपदी के बाल पकड़कर उसे खींचकर यहाँ लाओ।”

दुःशासन भी दुराचारी व दुष्ट था। वह द्रौपदी को बालों से खींचकर सभागृह में ले आया।

दुर्योधन ने द्रौपदी से कहा - “युधिष्ठिर ने द्यूत में सब कुछ गँवा दिया है। वह तुम्हें भी गवाँ चुका है। अब तुम मेरी दासी हो।”

सभा में उपस्थित सभी वरिष्ठ लोग - धृतराष्ट्र, भीष्म, द्रोण, कृपाचार्य, विदुर आदि सिर झुकाये बैठे थे। द्रौपदी ने उन सब की ओर बड़ी लाचारी व वेदना से देखा। किन्तु वे सब चुप रहे।

“जहाँ अधिकार का सदुपयोग और न्याय नहीं होता, वह राजसभा नहीं, एक चोरों की टोली है,” द्रौपदी ने अत्यंत क्रोधित होकर कहा।

भीम अब ज्वालामुखी की तरह धधक रहा था। उसने गरज कर कहा, “मैं दुःशासन के हाथ जला दूँगा।”

दुर्योधन ने भीम की खिल्ली उड़ाई। उसने दुःशासन को आज्ञा दी -

“द्रौपदी अब एक दासी है। उसे राजसी वस्त्र नहीं पहनने चाहिये। उसके वस्त्र खींच लो।”

वास्तव में द्रौपदी कौरवों की भाभी थी व माँ जैसी थी। सभी मर्यादाओं को कुचलते हुये दुःशासन आगे बढ़ा और उसने द्रौपदी की साड़ी खींचना शुरू किया। द्रौपदी अत्यंत व्यथित थी। उसने सबसे सहायता की याचना की।

“यह अपमान मृत्यु से भी भीषण है। कृपया मुझे बचाओ।” पाँचों पांडवों की ओर देखते हुए उसने कहा - “मेरे पिता को आपके बाहुबल पर बहुत विश्वास था। इस भरी सभा में मेरा अपमान हो रहा है, लेकिन आप सब हाथ बाँध कर बैठे हैं। क्या आप लोगों को लज्जा नहीं आती?” किन्तु सब व्यर्थ था।

द्रौपदी एक राजा की पुत्री थी और पांडवों की पत्नी मात्र नहीं थी। राजसूय यज्ञ के कारण वह सचमुच एक सम्राज्ञी थी। भरी सभा में उसका इस प्रकार अपमानित होना बहुत लज्जाजनक था। उसने भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना की - “हे कृष्ण! आप तो करुणामय व न्यायप्रिय हैं। आप ही मेरी रक्षा करो। मुझे बचाओ।” अपनी आँखें बंद कर अपने मन में वह भगवान श्रीकृष्ण से प्रार्थना करती रही।

और तभी एक आश्चर्य हुआ। द्रौपदी की साड़ी का कोई अंत ही नहीं था। वस्त्रों का ढेर लग गया। दुःशासन साड़ी खींचते-खींचते निढाल हो गया। लेकिन दुर्योधन का अहंकार कम नहीं हुआ। उसने अपनी जंघा थपथपाकर कहा - “द्रौपदी के वस्त्र नहीं निकले तो क्या हुआ, तुम मेरी दासी तो हो।”

### अपमान पर अपमान

एक राजघराने के सभागार में कौरवों का यह अत्यंत धिनौना व निन्दनीय दुष्कर्म था। द्रौपदी के धैर्य की परीक्षा अपने चरम पर थी। उसने दुर्योधन को श्राप दिया - “तुम्हारी इस जंघा के विध्वंस से तुम मरोगे।” उसने दुःशासन को कहा - “तुम्हें इस दुष्कृत्य का परिणाम भुगतना होगा। तुम्हारे रक्त से मैं अपने केश धोऊंगी।”

सारा राजवंश इस भयंकर प्रण को सुनकर घबरा गया। धरती काँपने लगी। सभी दिशाओं में अशुभ चिह्न दिखाई देने लगे।

सौ हाथियों के समान शक्तिशाली भीम अब तक अपने बड़े भाई के कारण चुप था। लेकिन अब उसके क्रोध की सीमा नहीं रही।

वह गरजकर बोला - “मैं इस पापी दुर्योधन की जाँघ फोड़कर उसे कुचल दूँगा। मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि मैं दुःशासन का सीना फाड़कर उसका लहू पी जाऊँगा।”

भीष्म और द्रोण ने धृतराष्ट्र को चेतावनी दी, “आप अपने पुत्रों की धृष्टता पर चुप क्यों हो। कुछ बोलते क्यों नहीं? एक सद्गुणी व आदर्श स्त्री द्रौपदी के श्राप से तुम्हारे वंश का अन्त हो जायेगा।”

अब धृतराष्ट्र भी डर गये। उन्होंने द्रौपदी को सांत्वना देते हुये कहा - “बेटी, तुम्हारा अपमान नहीं होना चाहिए था। सचमुच तुम एक अच्छी और गुणवती स्त्री हो। तुम मुझसे कोई भी वर माँग लो।”

द्रौपदी ने अपने पति को विमुक्त करने के लिए कहा। धृतराष्ट्र ने पांडवों का राज्य वापस दिया और उनसे सहानुभूति व्यक्त की।



### पांडवों का वनवास

कौरव क्रोध में थे। उन्होंने बड़ी चतुराई से पांडवों का राज्य जीता था। लेकिन उनके पिता ने सब कुछ लौटा दिया था। वह उनका राज्य फिर से हड़पना चाहते थे। दुर्योधन और उसके कपटी मामा शकुनि ने पुनः चाल चली। उन्होंने युधिष्ठिर को फिर से द्यूत के लिये निमंत्रण दिया। शर्त यह थी कि जो पक्ष हार जायेगा उसे बारह वर्ष वनवास में और एक वर्ष अज्ञातवास में रहना होगा। अज्ञातवास में अगर वे पहचान लिये गये तो उन्हें फिर से बारह वर्ष वन में रहना होगा और एक वर्ष अज्ञातवास में।

### युधिष्ठिर फिर से द्यूतक्रीड़ा में हार गये

दुर्भाग्यवश, युधिष्ठिर फिर दुर्योधन और शकुनि के जाल में फँस गये। वे द्यूतक्रीड़ा में हार गये। शर्त के अनुसार, पांडवों ने अपने राजवस्त्र छोड़ दिये और वृक्षों की खाल पहन कर वे वनवास के लिए चल पड़े। उनके साथ द्रौपदी भी थी। राजमहल के सुख त्याग कर आज वह मानसिक व शारीरिक कष्ट सहते हुये वन को चलने के लिए बाध्य हुई।

पांडवों का वनवास शुरू हुआ। श्रीकृष्ण पांडवों को जंगल में मिलते थे। भगवान् सूर्य ने युधिष्ठिर को एक ऐसी थाली दी थी जो द्रौपदी का भोजन होने तक खाली नहीं होती थी। द्रौपदी और पाँच पांडवों का नित्य भरपेट भोजन होता था। द्रौपदी सबके अन्त में भोजन करती थी। किन्तु एक नियम था - उस थाली का दिन में एक ही बार उपयोग करना था। इस तरह कष्टपूर्ण वन्य जीवन में भी द्रौपदी प्रसन्न और आनंद से सबका पोषण कर रही थी।

दुर्योधन ने पांडवों का राज्य छीन लिया था और उन्हें जंगल में भेज दिया था। फिर भी उसके मन में एक ही विचार रहता था - पांडवों को अधिक से अधिक कष्ट कैसे दिया जाये? एक बार दुर्वासा ऋषि उनके पास गये। दुर्योधन ने उनकी बड़ी आवभगत की। ऋषि बहुत प्रसन्न हुये। फिर दुर्योधन ने उनसे कहा कि वे अपने शिष्यों के साथ जंगल में जायें और वहाँ पांडवों से भी मिल लें। दुर्वासा ने मान लिया।

अतः दुर्वासा अपने सौ ब्राह्मणों के साथ वन में पांडवों से मिलने गये। युधिष्ठिर ने उनका अभिवादन किया। ऋषि भोजन करने से पहले स्नान, पूजा आदि करने गये। द्रौपदी भोजन कर चुकी थी। अब समस्या यह थी कि ऋषि और उनके शिष्यों के भोजन की व्यवस्था कैसे होगी? दुर्वासा अपने क्रोध के लिए प्रसिद्ध थे। अब द्रौपदी ने भगवान् कृष्ण का स्मरण कर उनसे प्रार्थना की - “हे भगवन्, सिर्फ आप ही हमारी रक्षा कर सकते हैं।”

द्रौपदी ने आँखें खोलकर देखा तो साक्षात् कृष्ण उसके सामने खड़े थे। उन्होंने कहा - “मैं भूखा हूँ। तुम मुझे क्या दोगी?”

द्रौपदी बड़ी प्रसन्न हुई कि भगवान् कृष्ण उसकी प्रार्थना सुनकर आये हैं। लेकिन उसकी थाली खाली थी। वह क्या दे सकती थी? उसने कहा - “हे भगवन्, हम लोग बड़े संकट में हैं।” उसने भगवान् कृष्ण से ऋषि दुर्वासा के आने और अपने धर्मसंकट के बारे में बताया। कृष्ण ने कहा - “तुम अपनी थाली यहाँ ले आओ।” द्रौपदी उस थाली को श्रीकृष्ण के पास लाई। थाली में अन्न का एक टुकड़ा लगा था। भगवान् कृष्ण ने उसे अपने मुँह से स्पर्श किया।

दुर्वासा और उनके शिष्य यमुना में स्नान करके लौटे। एकाएक सबको लगा कि उन्होंने मिष्ठानपूर्ण स्वादिष्ट भोजन कर लिया है। ऋषि दुर्वासा ने प्रसन्न होकर पांडवों को आशीर्वाद दिया और आगे चल पड़े।

### नीच जयद्रथ

द्रौपदी का जीवन अत्यन्त कष्टपूर्ण था। जयद्रथ सिंधु देश का राजा था और धृतराष्ट्र की बेटी दुशला से उसका विवाह हुआ था। जयद्रथ भी द्रौपदी के विवाह के स्वयंवर में था। उसने सोचा कि द्रौपदी को अपनी संपत्ति दिखा कर आकर्षित किया जाये। वह ऐसे समय की प्रतीक्षा करने लगा जब द्रौपदी अकेली हो। वह द्रौपदी के पास हीरे-जवाहरात ले गया परन्तु द्रौपदी ने उसे ठुकरा दिया। इस पर जयद्रथ ने द्रौपदी को बलपूर्वक अपने रथ में बिठाया और भाग निकला। जब भीम और अर्जुन को इसका पता लगा तो वे क्रोधित हो गये। भीम उसे पकड़ कर मारने ही वाला था कि युधिष्ठिर ने भीम को रोक दिया।

### रानी सुदेष्णा की दासी

अब पांडवों का बारह वर्ष का वनवास समाप्त हो चुका था। उन्हें तेरहवाँ वर्ष अज्ञातवास में बिताना था। यह अत्यंत कठिन कार्य काम था।

पांडवों ने इस पर बहुत विचार किया। उन्होंने एक योजना बनाई। वे सब मत्स्य देश के राजा विराट के पास नौकरी करने के लिये गये। युधिष्ठिर ने एक ब्राह्मण का वेश धारण किया और अपना नाम कंकभट्ट रखा। भीम ने बल्लव नाम से रसोइये का काम सम्भाला। अर्जुन बृहन्ना नाम से राजकुमारी के नृत्य शिक्षक बन गये। नकुल घुड़शाला का काम



देखने लगे और सहदेव राजमहल की गोशाला की देखभाल करते थे। इस प्रकार राजा ने उन्हें विभिन्न कार्यभार सौंप दिये।

द्रौपदी ने विराट की रानी सुदेष्णा के पास जाकर उसकी दासी बनने की याचना की। सुदेष्णा द्रौपदी के अनुपम सौंदर्य व संस्कारयुक्त व्यवहार पर आश्चर्यचकित हुई। द्रौपदी के आकर्षक व सौम्य व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उसने पूछा - “तुम कौन हो और कहाँ से आयी हो?”

द्रौपदी ने कहा - “मैं पाँच गंधर्वों की पत्नी हूँ। वे सब स्वर्ग के संगीतज्ञ हैं। मैं अच्छी केश रचना करने में प्रवीण हूँ। मैं आपकी एक वर्ष तक सेवा करना चाहती हूँ।”

रानी सुदेष्णा ने प्रसन्न होकर द्रौपदी को काम पर रख लिया।

इस प्रकार राजा द्रुपद की लाड़ली कन्या, महापराक्रमी व शक्तिशाली पांडवों की पत्नी, एक राजघराने की सम्राज्ञी और भगवान श्रीकृष्ण की मुंहबोली बहन द्रौपदी अब रानी सुदेष्णा की दासी बन गयी। लेकिन उस चुनौतीपूर्ण समय में यही उत्तम विकल्प था। वह अपने पाँचों पतियों को, जो उसी राजमहल में ही कार्यरत थे, देख सकती थी।

### पग-पग पर परीक्षा - कीचक का अन्त

एक बात तो विधि द्वारा तय थी कि देवी द्रौपदी की अग्नि परीक्षा पग-पग पर होगी। कीचक रानी सुदेष्णा का छोटा भाई था। वह बहुत शक्तिशाली था। एक बार उसने द्रौपदी को देखा और उसके सौंदर्य व स्त्री सुलभ गुणों से प्रभावित हो गया। उसने अपनी बहन से पूछा - “यह सुन्दर स्त्री कौन है?”

सुदेष्णा अपने भाई की बुरी दृष्टि को भाँप गयी। उसने कहा - “भैया, वह पाँच गंधर्वों की पत्नी है। एक दासी होते हुए भी वह एक पतिव्रता व चरित्रवान स्त्री है।”

कीचक ने गुप्त रूप से द्रौपदी के समक्ष विवाह का प्रस्ताव रखा।

द्रौपदी ने कीचक के प्रस्ताव को ठुकरा दिया व भविष्य में सोच समझकर आचरण करने की चेतावनी दे दी। लेकिन कीचक उसका पीछा करता रहा।

एक बार द्रौपदी कीचक की शिकायत करने राजा विराट की सभा में पहुँची। कंकभट्ट (युधिष्ठिर) और बल्लव (भीम) भी वहाँ उपस्थित थे। वहाँ कीचक ने गुस्से में द्रौपदी को अपशब्द कहे।

द्रौपदी बहुत क्रोधित हो गई। उसने भरी सभा में कहा - “कीचक मुझे अपमानित कर रहा है और आप सभी मूक बन कर देख रहे हैं। क्या यही राज्य का शासन होता है?”

रसोइये के वेश में बैठा भीम क्रोध से फुफकार रहा था। वह कीचक का उसी समय अन्त करना चाहता था। किन्तु युधिष्ठिर ने उसे शांत किया - “भीम, जरा रुक जाओ, अभी उचित समय नहीं है।” उसने द्रौपदी को भी समझाकर वापस भेज दिया। द्रौपदी ने अपने क्रोध को किसी प्रकार सँभाला।

परन्तु बाद में क्रोधित होकर द्रौपदी भीम से बोली - “मेरे पाँच पति बलशाली होते हुए भी मेरी सुरक्षा नहीं कर सकते। युधिष्ठिर न्याय और नीति से बँधे हुए हैं। अर्जुन नृत्य सिखाने में व्यस्त हैं। नकुल और सहदेव बलवान नहीं हैं। क्या आप भी कुछ नहीं कर सकोगे? और कितने

अपमान मुझे सहन करने होंगे ? मैं आप सबको केवल कष्ट ही देती आई हूँ और मेरे कारण ही यह सब हो रहा है। अब मैं मृत्यु चाहती हूँ।’

द्रौपदी की पीड़ा देखकर भीम भावुक हो गया। उसने कहा – “तुम कीचक को किसी प्रकार नृत्यशाला में आने को विवश कर दो। मैं उसे वहीं खत्म कर दूँगा।”

दूसरे दिन कीचक द्रौपदी के कमरे में आया और उससे दुर्व्यवहार करने लगा। द्रौपदी ने उसे कहा – “आप आज रात को नृत्यशाला में आइये। मैं वहाँ आपसे मिलूँगी।”

कीचक को लगा कि द्रौपदी अब उसे चाहने लगी है। उस रात्रि को वह नृत्यशाला में पहुँचा ही था कि भीम उस पर टूट पड़ा। कीचक भी कोई साधारण व्यक्ति नहीं था। वह भी बहुत बलवान था। दोनों के बीच भयंकर द्वंद्व हुआ। अन्त में भीम ने उसे मार डाला।

सुबह होते ही जब कीचक की मृत्यु का समाचार फैला तो राज्य में हाहाकार मच गया। कीचक के भाई क्रोध से भड़क उठे। भीम चुपचाप श्मशानभूमि की ओर चले गये।

सुदेष्णा ने द्रौपदी को बुलाकर कहा – “तुम्हारे कारण ही यह सब घटित हो रहा है। अब तुम यहाँ से दूर चली जाओ।” द्रौपदी ने रानी से निवेदन किया – “महारानी, अब बहुत ही कम समय रह गया है। मेरे पति मुझे ले जायेंगे।”

#### अज्ञातवास समाप्त

इस तरह अज्ञातवास किसी प्रकार बीत गया। पांडव अपना वेष



त्याग कर वास्तविक रूप में प्रकट हुए। राजा विराट पूरा सत्य जानकर आश्चर्यचकित रह गये। वे इस बात से प्रसन्न थे कि पाण्डवों का संकट काल समाप्त हुआ। परन्तु उन्हें दुःख भी हुआ कि इतने बड़े राजवंशियों व योद्धाओं को उनके यहाँ नौकरी करनी पड़ी।

राजा विराट अपनी पुत्री उत्तरा का विवाह अर्जुन से करना चाहते थे, परन्तु अर्जुन ने इनकार कर दिया। अर्जुन ने कहा, 'उत्तरा मेरी शिष्या रही है। आप चाहें तो उत्तरा का विवाह मेरे पुत्र अभिमन्यु से कर सकते हैं।' अतः अभिमन्यु का विवाह उत्तरा से सम्पन्न हुआ।

#### भगवन्, कौरवों को दण्डित करो

शर्त के अनुसार, वनवास के पश्चात् अब कौरवों को आधा राज्य पांडवों को लौटाना था। इस सम्बन्ध में भगवान श्रीकृष्ण दुर्योधन के पास गये। उसने पांडवों का राज्य लौटाने से स्पष्ट इनकार कर दिया। युधिष्ठिर ने यहाँ तक कहा - "हमें आधा राज्य न सही, केवल पाँच गाँव ही दे दो। लेकिन युद्ध नहीं होना चाहिए।"

द्रौपदी पांडवों से विवाह करने के बाद दुःख और अपमान को स्मरण कर बहुत दुखी थी। उसने श्रीकृष्ण से कहा - "हे भगवन्, क्या किसी स्त्री ने मेरे जैसा दुःख उठाया है? यदि आपको मेरे प्रति स्नेह हो तो कौरवों को अवश्य दण्डित करो। किस तरह दुःशासन ने मुझे भरी सभा में अपमानित किया था, आपको स्मरण होगा। मेरा हृदय तब तक शांत नहीं होगा जब तक दुःशासन के हाथ कटकर धूल धूसरित नहीं हो जाते। अब शांति की बातें मत करो और युद्ध का निर्णय लो।"

श्रीकृष्ण ने द्रौपदी को आश्वासन दिया - 'बहन, तुम निश्चित रहो। जिन्होंने तुम्हें अपमानित किया था, उन्हें उसका फल अवश्य मिलेगा।'

### प्रतिज्ञा पूर्ण

पांडवों और कौरवों के बीच सुलह व शांतिपूर्ण समाधान के सभी प्रयास विफल रहे। अन्ततः कुरुक्षेत्र के मैदान पर भीषण युद्ध हुआ। यह युद्ध अठारह दिन तक चला। इसमें लाखों लोगों की जानें गईं। असंख्य हाथी, घोड़े इत्यादि मारे गये। भयंकर रक्तपात हुआ। भीष्म बाणशय्या पर सो गये। कर्ण अर्जुन के हाथों मारा गया।

नकुल और सहदेव ने शकुनि और उसके पुत्रों को मारा। भीम ने दुःशासन को रथ से खींचकर अपनी गदा से मारा और उसका सीना फाड़कर द्रौपदी के अपमान का बदला लिया। दुर्योधन की जंघा भी भीम ने क्षत विक्षत कर दी।

### दुःख ही दुःख

इस महायुद्ध के पश्चात् पांडव अपने डेरे में वापस आये। उन्होंने सोचा कि अब सभी कौरव मारे गये हैं और विजय श्री उनके हाथ में है। किन्तु द्रौपदी के दुःख अभी समाप्त नहीं हुए थे।

द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने दुर्योधन को सांत्वना दी और पांडवों को मारने की शपथ ली। रात को वह पांडवों के डेरे में गया। पराक्रमी पांडवों को वह हाथ नहीं लगा सकता था। अतः उसने द्रौपदी के पुत्र उप-पांडवों के सिर काट दिये।

दिन निकलने के बाद जब द्रौपदी ने यह दृश्य देखा तो उसके दुःख

की कोई सीमा नहीं रही। आँसू बहाते-बहाते वह जमीन पर गिर पड़ी। कई वर्षों तक द्रौपदी शारीरिक और मानसिक वेदना सहती रही और अब सारे पुत्र मारे गये जबकि सुख के क्षण निकट ही थे।

### स्वर्गारोहण

युद्ध समाप्त हुआ। युधिष्ठिर का राज्याभिषेक होने वाला था। परन्तु युद्ध में हुई अपार क्षति से युधिष्ठिर विचलित हो उठा। उसने कहा-“मैंने अपने ही सगे-सम्बन्धियों को मारा है, मैं पापी हूँ। इतनी हिंसा के बाद राज्य प्राप्त करना-इसमें कैसी विजय। अब मैं राजा नहीं बनना चाहता।”

द्रौपदी ने युधिष्ठिर को समझाते हुए कहा-“यह युद्ध सत्य व असत्य के मध्य न्याय के लिए हुआ। कौरवों ने अपने ही हाथों अपना नाश किया। अब जो जीवित हैं, उनका संरक्षण करना और न्यायपूर्वक राज करना, यही हमारा कर्तव्य है।”

द्रौपदी की बात मान कर युधिष्ठिर फिर सिंहासन पर बैठे और एक धर्माचारी, न्यायप्रिय व कुशल राजा की भाँति राज्यभार सँभाला। उन्होंने धृतराष्ट्र और गांधारी की भी देखभाल की।

कुछ समय के बाद श्रीकृष्ण, धृतराष्ट्र, गांधारी और कुंती भी परलोक सिधार गये। उनके वियोग में पांडव गहरे दुःख में डूब गये। उन्होंने अपने प्रपौत्रों के हाथ में राजसत्ता सौंप दी। जब वे स्वर्गारोहण के लिए मेरु पर्वत के पास आये, वहीं द्रौपदी भी स्वर्ग सिधार गयी।

### दृढ़ निश्चयी व विलक्षण महिला

यदि द्रौपदी के पूरे जीवन पर दृष्टि डालें तो ऐसा प्रतीत होता है कि



वह एक विलक्षण गुणों वाली महिला थीं। वह एक ओर अदम्य साहस, स्वाभिमान व दृढ़ निश्चय का प्रतीक थी। तो वहीं करुणा, दया, धर्म, धैर्य व आदरभाव जैसे गुणों से भी वह परिपूर्ण थी।

द्रौपदी ने स्वयं एक बार श्रीकृष्ण से कहा था - “मैं द्रुपद की राजकन्या हूँ, धृष्टद्युम्न की बहन हूँ, तुम्हारी भक्त हूँ, पांडवों की रानी हूँ, मैं महापराक्रमी उप - पांडवों की माँ हूँ और फिर भी मैंने कितने अपमान सहन किये हैं।”

जब युधिष्ठिर द्रौपदी को द्यूत में हार गये तो उन्होंने साहसपूर्वक पूछा - “उन्होंने पहले स्वयं को दाँव पर लगाया था या मुझे? अगर वे पहले स्वयं हारे, तो उनका मुझ पर कोई अधिकार नहीं।” राजसभा में उपस्थित कोई भी व्यक्ति द्रौपदी के तर्क का उत्तर नहीं दे सका।

द्रौपदी ने एक बार राजसभा में सभी को डाँटकर कहा - “जहाँ द्रोण और महाबली भीष्म जैसे महापराक्रमी अनैतिकता को देखते हुये भी चुपचाप बैठे हों, वह राजसभा नहीं, चोरों की टोली है।”

बारह वर्ष के वनवास और एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद युधिष्ठिर ने कहा - “असंख्य व्यक्तियों को मौत के घाट उतारने वाला युद्ध नहीं होना चाहिये। यदि दुर्योधन केवल पाँच गाँव ही दे देता है, तो हमें संतोष है।” तब द्रौपदी ने क्रोधित होकर कहा था - “यदि आप में कौरवों से लड़ने का साहस व निश्चय नहीं है तो मैं अपने पिता, भाई, अभिमन्यु और अन्य लोगों को लड़ने के लिए तैयार करूँगी।”

### **करुणा, दयाभाव व स्वाभिमान**

इस तेजस्वी स्त्री के हृदय में भरपूर दया और प्रेम भी था। धृतराष्ट्र





**COLLECTION OF VARIOUS**  
-> **HINDUISM SCRIPTURES**  
-> **HINDU COMICS**  
-> **AYURVEDA**  
-> **MAGZINES**

**FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)**

**Made with**



**By**

**Avinash/Shashi**

**[creator of  
hinduism  
server]**



**KAPWING**



और गांधारी के पुत्रों ने उसे अपमानित किया था, परन्तु महाभारत के युद्ध के बाद द्रौपदी ने कुंती के समान ही गांधारी से प्रेम और सम्मानपूर्वक व्यवहार किया।

जब द्यूतक्रीड़ा में पाण्डव द्रौपदी को हार गये थे तो दुःशासन ने वाचालतापूर्वक द्रौपदी को अपने दरबार में बुलाया और अभद्र व्यवहार किया। द्रौपदी ने अपने केश खोलते हुये यह प्रतिज्ञा की - 'मैं इन केशों को दुःशासन के रक्त से धोकर ही पुनः बाँधूंगी।'।

### अविस्मरणीय स्त्री

निस्संदेह, द्रौपदी दृढ़ निश्चय, आत्मविश्वास तथा स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति थी। वह भारतवर्ष की महान नारियों में से एक है। उसका पतिव्रत्य ही उसकी तेजस्विता थी। द्रौपदी किसी भी प्रकार से भीम और अर्जुन से सामर्थ्य-उत्साह-शूरता और सद्गुण में कम नहीं थी। उसका असाधारण व्यक्तित्व निश्चित रूप से प्रेरणादायक और अनुकरणीय है।

